पाठ 13. सूरदास के पद

पाठ का परिचय

पहला पद – (यशोदा को उलाहना देती हुई कोई गोपी कह रही है) हे यशोदा, तुम्हारा संकोच (शील) मैं कब तक करूँ। (भला, बताओ) रोज़ाना दूध और दही की हानि कैसे सही जा सकती है। यदि तुम अपने इस बालक की करतूत आकर देखो तो तुम्हें सब वास्तविकता मालूम हो जाए। यह स्वयं तो दही खाता ही है (अन्य) बालकों को भी खिलाता है (और अंत में) बर्तनों को तोड़कर भाग जाता है। मैंने अपने घर के एक कोने में मक्खन को ढककर (छिपाकर) रखा था, लेकिन तुम्हारे पुत्र ने उसे भी पहचान लिया (खोज लिया)। जब मैंने आने का कारण पूछा तो कृष्ण ने कहा कि गोपी मैं तो अपने घर में आया हूँ, और यहाँ आने में मुझे थोड़ा भी संकोच नहीं हुआ। सूरदास जी कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने यह बहाना भी बनाया कि मैं (दही में पड़ी) चीटियों को हाथ से निकाल रहा था।

दूसरा पद – (यशोदा श्रीकृष्ण से कह रही हैं) हे कृष्ण, तुम मुझसे (बिलकुल) नहीं डरते हो। तुम घर में रखे हुए षट्रस (भिन्न-भिन्न तरह के) व्यंजन को त्यागकर क्यों दूसरे के घर में चोरी कर-करके खाते हो? मैं तुम्हें कहते-कहते (समझाते-समझाते) थक गई, किंतु तुम्हें थोड़ी भी लज्जा नहीं आई। नंद जी इस ब्रज परगना के सिक्केदार हैं। तुम उनकी छोटाई (बदनामी) करवाते हो। मैंने अब यह बात समझ ली है कि मेरे कुल में तू एक सुपुत्र उत्पन्न हुआ है (व्यंग्यार्थ कुपुत्र है)। सूरदास जी कहते हैं कि यशोदा जी कह रही हैं कि मैंने अभी तक तुम्हें बहुत माफ़ किया, लेकिन (अंत में) मैंने तुम्हारी घात (दाँव) को समझ लिया है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

श्रीकृष्ण के बाल्यकाल के जीवन का परिचय इस कविता में दिया गया है। इसमें सूरदास का श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम प्रदर्शित हो रहा है। ईश्वर की लीला न्यारी है। वे कब, क्या करते हैं यह कोई नहीं जान सकता।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका कविता का सस्वर वाचन करें। यदि संभव हो तो पदों को गाकर बच्चों को सुनाएँ। इसके बाद बच्चे भी इनका अनुकरण वाचन करें। समूहगान के रूप में भी इन पदों को गाया जा सकता है। वाचन करते समय उच्चारण का ध्यान रखें। उच्चारण गलत होने पर बच्चों को सही उच्चारण बताएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर बच्चों से कक्षा में चर्चा करें –

- सूरदास के पद किस भावना को प्रदर्शित कर रहे हैं?
- इन पदों में श्रीकृष्ण के बाल्यकाल का जो चित्रण हुआ है, क्या तुमने भी कभी ऐसी शरारतें की हैं?
- बच्चों को किस हद तक शरारतें करनी चाहिए?
- अधिक शरारतें करने पर बच्चों को डाँटना चाहिए या नहीं?